नाम – प्रो० भूपेन्द्र कुमार दुबे

महाविद्यालय – दुर्गा महाविद्यालय, रामपुर

संकाय – कला

पदनाम – सहायक प्राध्यापक
(भूगोल विभाग)

विषय – भूगोल

शीर्षक – "सामाजिक खुशहाली एवं मानव विकास"
(Social Well – being and Human Development)

Scanned with OKEN Scanner

सामाजिक खुशहाली और मानव विकास
(Social Well-being and Human Development)

सामाजिक खुशहाली
(Social Well-being)

सामाजिक खुशहाली का साधारण अर्थ, है समाज में रहने वाले लोगों की खुशहाली या कुशलता। किसी देश या समाज में जहाँ अनेक जाति, सम्प्रदाय, वर्ग आदि के लोग रहते है, वहाँ सभी लोगो का जीवन स्तर एक समान नहीं हो सकता किन्तु वे कुशल क्षेम को प्राप्त कर सकते है यदि उनकी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। खुशहाली या कुशल-क्षेम सामान्यतः विकास से सम्बन्धित और उसका अनुयायी है। विकास का अभिप्राय उस प्रक्रम से है जो सर्वसाधारण की आर्थिक स्थिति में सुधार, मानव कल्याण में वृद्धि तथा जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिये प्रयत्नशील होता है। इसमें विदित है कि सामाजिक खुशहाली संपूर्ण विकास का परिणाम होती है और इसे एकांगी विकास से नहीं प्राप्त किया जा सकता।

मानव भूगोल शब्दकोष के अनुसार "सामाजिक खुशहाली वह दशा है जिसमें जनसंख्या की आवश्यकताएं और मांगें संतोषजनक होती है।"

एक खुशहाल समाज (Well society) वह जिसमें रहने वाले लोग अपनी मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये पर्याप्त आय रखते है, जहाँ निर्धनता का समापन हो चुका है, जहाँ लोग सामाजिक और आर्थिक रूप से गतिशील तथा क्रियाशील होते है और दूसरो की प्रतिष्ठा एवं मर्यादा का सम्मान करते है तथा जहाँ लोग स्थिर, लोकतांत्रिक तथा सहयोग पूर्ण एवं समता - आधारित पर्यावरण में वस्तुओ और सेवाओ को प्राप्त करने में समर्थ होते है।

सामाजिक खुशहाली के संकेतक

(Indicators of social Well-being)

सामाजिक खुशहाली वह दशा है जिसमें जनसंख्या की आवश्यकताएं और मांगे संतोष प्रद होती हैं। भिन्न - भिन्न क्षेत्रो में और समय के संदर्भ में सामाजिक खुशहाली या जीवन कुशलता या गुणवत्ता (Quality of Life) के आकलन के लिये अच्छाइयों तथा बुराइयों (Goods and Bads) के स्थानिक वितरण का माप की जाती है। जिसके लिए अनेक संकेतको का प्रयोग किया जाता है।

सामाजिक खुशहाली के अध्ययन तथा मूल्यांकन का कार्य 1970 के दशक से अधिक तीव्र हो गया। जब 1960 के दशक

में विकसित मात्रात्मक तथा मॉडल निर्माण के चिंतनफल का स्थानांतरण कल्याणपरक उपागम के रूप में हुआ। सामाजिक कल्याण मुख्यतः निर्धनता, भूख, अपराध, असमानता, सामाजिक सेवाओं तक पहुँच आदि विषयों से संबंधित है। इस प्रकार अब मुख्य विषय सामाजिक धन तथा और विकास के संकीर्ण आर्थिक मापदंड के स्थान पर जीवन की गुणवत्ता के विस्तृत पक्षों को मापदण्ड के रूप में स्वीकार किया जाने लगा।

(1) आय (Income)

व्यक्ति अपनी आर्थिक आय के अनुसार ही अपनी आवश्यकताओं तथा मांगों को पूरा करने में समर्थ होता है। अतः व्यक्ति के जीवन-स्तर का प्रत्यक्ष संबंध उसकी आय से होता है। इसलिये किसी देश या समाज की आय में वृद्धि को सामाजिक प्रगति और लोगों के खुशहाल जीवन का संकेतक समझा जाता है। आय के स्तर को मापने के लिये सामान्यतः दो प्रकार के आंकड़ों का प्रयोग किया जाता है— (i) राष्ट्रीय आय (ii) प्रति व्यक्ति आय

राष्ट्रीय आय का अभिप्राय किसी अर्थव्यवस्था में एक निश्चित समयावधि में उत्पादित समस्त वस्तुओं और सेवाओं के कुल मौद्रिक योग से है। राष्ट्रीय आय को कई प्रकार से

किया गया जाता है, जिनमे दो सूचक अधिक प्रयुक्त होते हैं — (अ) सकल राष्ट्रीय उत्पाद (Gross National Product - G N P), (ब) सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product - G.D.P) |

बाजार कीमत पर "सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) किसी देश में उत्पादित समस्त वस्तुओ और सेवाओं के मूल्यो के योग तथा विदेशों से प्राप्त शुद्ध आय के योग के बराबर होता है। सकल राष्ट्रीय उत्पाद में पूँजी - मूल्य ह्रास को घटा देने पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद (Net National Product) NNP प्राप्त होता है।

सकल घरेलू उत्पाद (GDP) से तात्पर्य किसी देश की सीमा के भीतर ही एक वर्ष की अवधि में उत्पादित वस्तुओ और सेवाओं के बाजार कीमत पर आकलित मूल्य से होता है। इसकी गणना में विदेशो से प्राप्त शुद्ध आय को नही जोड़ा जाता है।

(2) रोजगार (Employment)

किसी देश की कार्यशील जनसंख्या या श्रमिक ही आर्थिक विकास के मूलभूत एवं सक्रिय साधन होते हैं। देश की उत्पादन क्षमता या विकास दर मुख्यत: श्रमिको की संख्या, उनकी योग्यता, कार्य कुशलता आदि पर निर्भर करती है। सामाजिक खुशहाली तथा जीवन गुणवत्ता के दृष्टिकोण

से वह सामाजिक रूप से समाज अधिक खुशहाल होगा जहाँ से अधिक लोग अपनी योग्यता तथा रुचि के अनुसार विभिन्न आर्थिक क्रियाओं में संलग्न हों और अपनी आवश्यकताओं तथा मांगों की पूर्ति हेतु पर्याप्त आय प्राप्त करते हो। ऐसे व्यक्ति को बेरोजगार माना जाता है जो लोग कार्य करने में सक्षम तथा तत्पर होते हुए भी किसी आर्थिक कार्य में योगदान नहीं देते हैं। रोजगार तथा आय के अभाव में बेरोजगार व्यक्ति अपने परिवार के अन्य कार्यशील व्यक्ति या व्यक्तियों पर आश्रित होते हैं। इस प्रकार कार्यरत या उत्पादक व्यक्तियों पर निर्भरता बढ़ती है और प्रति व्यक्ति आय भी घटती है। बेरोजगारी बढ़ने से जीवन-स्तर या जीवन की गुणवत्ता में ह्रास होना निश्चित है।

(3) आवासीय दशा (Residential condition)

गृह या आवास मनुष्य की तीव्र प्रमुख प्राथमिक आवश्यकताओं में से एक है। प्रत्येक व्यक्ति तथा परिवार को रहने के लिये, कार्य के लिये, वस्तुओं को रखने के लिये तथा अन्य आवश्यक कार्यों के लिए गृह या आवास की आवश्यकता होती है। गृहों के आकार-प्रकार व्यक्ति की आर्थिक-सामाजिक स्थिति के अनुसार विभिन्नतापूर्ण होते हैं। निर्धनता और घनी गृह तथा ग्रामीण एवं नगरीय गृहों में पर्याप्त अंतर पाया जाता है।

उस समाज या देश में जीवन की गुणवत्ता उच्च मानी जा सकती है। जहाँ अधिकाँश या सभी लोगों के रहने के लिये सुविधाजनक आवास उपलब्ध है। उसके साथ ही आवासीय क्षेत्र में पर्यावरण प्रदूषण निम्नस्तर पर हो अर्थात पर्यावरण साफ, स्वच्छ हो। पीने के लिये शुद्ध पानी, वायु, शोर मुक्त वातावरण तथा समस्याँ रहित वातावरण उपलब्ध हो।

(4) स्वास्थ्य (Health)

मनुष्य के शारीरिक तथा मानसिक विकास हेतु, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि कार्यों में सफल भागीदारी के लिये, सुख पूर्वक जीवन यापन के लिए स्वास्थ्य का उत्तम होना आवश्यक होता है। अस्वस्थ्य व्यक्ति का समुचित शारीरिक विकास और मानसिक विकास नहीं हो पाता। जिसके कारण वह अपने विविध प्रकार के दायित्वों का निर्वाह नहीं कर पाता है। किसी भी समाज या देश में घटित होने वाले प्राकृतिक प्रकोप, बिमारियाँ चिकित्सा, सुविधाओं का आभाव, पर्यावरण प्रदूषण, अज्ञानता, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता आदि जन-स्वास्थ्य को बुरी तरह प्रभावित करता है।

स्वास्थ्य संबंधी दशाओं की माप के लिये कई मात्रात्मक सूचकों का प्रयोग किया जाता है। जिनमें जीवन प्रत्याशा (Life expectancy) और मृत्युदर सर्वाधिक प्रयुक्त लोकप्रिय सूचक है। जिस देश या

समाज में जीवन प्रत्याशा या दीर्घ जीविता अधिक पायी जाती है वहाँ के लोगो को स्वास्थ्य सुविधा तथा भरण-पोषण की सुविधाएँ अपेक्षाकृत अधिक उपलब्ध होती है। जिससे उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है। वे दीर्घायु होते है। विकसित देशो में जन्मे लोगो की जीवित रहने और औसत आयु या जीवन प्रत्याशा (Life expectancy) सामान्यतः 75 वर्ष से ऊपर पायी जाती है।

(5) शैक्षिक दशा (Educational condition)

शिक्षा व्यक्ति के सोचने-विचारने तथा कार्य करने की योग्यता में वृद्धि करती है उसे उच्च जीवन-स्तर की उपलब्धि हेतु नवीन खोजों तथा कौशलपूर्ण कार्यो को करने की दिशा में प्रवृत्त करती है। इसमें सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त होता है और जीवन स्तर उच्चतर होता है। साक्षरता (Literacy) शिक्षा का आरंभिक बिंदु है। वास्तव में शिक्षा और साक्षरता में कुछ मौलिक अंतर माना जाता है। जो व्यक्ति कम से कम एक भाषा में पढ़ना और लिखना जानता है तथा अपना हस्ताक्षर बना लेता है उसे साक्षर माना जाता है जबकि शिक्षा के लिए पाठशाला उत्तीर्ण करना भी आवश्यक है। शिक्षा और प्रशिक्षण द्वारा व्यावसायिक गतिशीलता उत्पन्न होती है। श्रम का प्रयोगिक क्रियाओं में द्वितीयक, तृतीयक आदि कार्यों का स्थानान्तरण होता है, जिससे फलस्वरूप व्यक्ति की आय में वृद्धि और जीवन स्तर में उत्थान होता है।

(ब) मानव विकास
(Human Development)

1. विकास का अर्थ
(Meaning of Development) :- विकास एक बहु-आयामी संकल्पना है जिसके अनेक आयाम हैं जैसे आर्थिक विकास, सामाजिक विकास, राजनीतिक विकास, संस्थागत विकास, पारिस्थितिकीय विकास, मानव विकास आदि। विकास का सामान्य अर्थ उस प्रक्रम (Process) से है जो जनता की आर्थिक स्थिति में सुधार, मानव कल्याण में वृद्धि तथा जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिये सतत प्रयत्नशील होता है। संयुक्त राष्ट्र विकास प्रोग्राम की रिपोर्ट के अनुसार "विकास एक व्यापक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक प्रक्रम है जिसका उद्देश्य संपूर्ण जनसंख्या और सभी व्यक्तियों में सामाजिक-कुशल क्षेम में स्थिर सुधार करना होता है जो विकास में उनके सक्रिय, स्वतंत्र तथा सार्थक भागीदारी और उनसे उत्पन्न लोगों के निष्पक्ष वितरण पर आधारित होता है।"

(2.) मानव विकास (Human Development) :-
मानव विकास सामान्यतः किसी देश या समाज के सर्वांगीण विकास को प्रकट करता है। जिसका अर्थ समाज के सभी लोगों या जनसाधारण की जीवन दशा में

Scanned with OKEN Scanner

गुणात्मक वृद्धि या सुधार से है आ जैसे उच्चतर प्रति व्यक्ति आय, सबके लिये शिक्षा, सबके लिये स्वास्थ्य सुविधायें, रोजगार, सबके लिये समुचित आवास, शुद्ध पेय जल, शुद्ध वायु तथा स्वच्छ पर्यावरण आदि की उपलब्धता। केवल आर्थिक संवृद्धि पर आधारित विकास वास्तविक विकास या मानव विकास को प्रकट नहीं करता है और सकल राष्ट्रीय उत्पाद GNP या प्रति व्यक्ति आय per capita income इसके सही सूचक नहीं हो सकते।

"विकास विशेषज्ञ: मानव विकास का तात्पर्य उस संतुलित विकास से है जो समानता, सहयोग, सहभागिता और सामाजिक न्याय के सिद्धांत पर आधारित होता है।"

3. मानव विकास सूचकांक (Human Development Index) :-

HDI के परिकलन में निम्नांकित चार संकेतकों का प्रयोग किया गया है-

(i) जीवन प्रत्याशा (Life Expectancy) :-

∴ जन्म पर जीवन प्रत्याशा (Life Expectancy) नवजात शिशु की सम्भावित आयु को प्रकट करती है जो उसके जन्म के समय विद्यमान मर्त्यता प्रतिरूपों (Mortality patterns) पर आधारित होती है। यह स्वास्थ्य और पोषण को प्रदर्शित करने वाला विश्वसनीय सूचक है तथा आय-स्तर से भी

प्रभावित होता है। जीवन प्रत्याशा और मृत्युदर में उल्टा संबंध पाया जाता है। जबकि जीवन प्रत्याशा आर्थिक स्तर तथा जीवन स्तर का सहचर या अनुचर प्रतीत होती है।

② वयस्क साक्षरता (Adult Literacy):-

वयस्क या प्रौढ़ साक्षरता सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक प्रगति का सहचर और शैक्षिक उपलब्धियों का आधारभूत संकेतक है। साक्षरता एक वैयक्तिक गुण है जो किसी व्यक्ति के पढ़ने-लिखने की योग्यता तथा ज्ञान के स्तर को प्रकट करती है।

$$\text{वयस्क साक्षरता दर} = \frac{\text{15 वर्ष या अधिक की साक्षर जनसंख्या}}{\text{15 वर्ष या अधिक आयु की कुल जनसंख्या}} \times 100$$

③ संयुक्त कुल नामांकन अनुपात (Combined Gross Enrolment Ratio):- शैक्षिक उपलब्धि के आकलन हेतु वयस्क साक्षरता के सहायक के रूप में संयुक्त कुल नामांकन अनुपात को सम्मिलित किया गया है। यह प्रत्येक विद्यालयी स्तर पर नामांकित विद्यार्थियों की संख्या और संबंधित आयु वर्ग के कुल बच्चों की कुल संख्या

के प्रतिशत अनुपात को व्यक्त करता है। यह शैक्षिक स्तर की माप का अपेक्षाकृत अधिक सार्थक एवं महत्वपूर्ण संकेतक है।

(4) प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic product - GDP per capita):-

देश के सकल घरेलू उत्पाद में उसकी कुल जनसंख्या से भाग देकर प्रति-व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद की गणना की जाती है। इसे कुल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) की तुलना में अधिक उपयुक्त माना जाता है। संयुक्त राष्ट्र विकास रिपोर्ट (2004) में मानव विकास सूचकांक के परिकलन हेतु प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद का प्रयोग किया गया है। इसे डॉलर (US $) में परिवर्तित करके तुलनीय बनाया गया है।